वेदोदय का 'आर्य्यसमाज अंक



सम्पादक

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय, एम० ए०

विषय सूची

चित्र-सूची

चमचम पर सम्मतियां

श्री० प्रो० ब्रजराज जी M. A., B. Sc., LL.B. प्रधान मन्त्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, "चमचम को मैंने पढ़ा। इस बच्चों के पत्र का मैं हृदय से स्वागत करता हूँ। पत्र सुन्दर है और बच्चों को अवश्य प्रिय होगा। मैं श्री विश्वप्रकाश जी को इस उद्योग पर बधाई देता हूँ। विश्वास है इस पत्र का यथेष्ट होगा।"

रायबहादुर बा० हीरालाल जी बी० ए०, एम० आर० ए० एस० रिटायर्ड डिप्टी कमिश्नर "हर्ष है कि बालकों के विनोदार्थ अब उनके पढ़ने योग्य पत्रिकाएं निकलने लगी हैं उनमें से 'चमचम' भी है इसके लेख बालकों के चित्त को आकृष्ट करेंगे और अपनी चमचमाहट से प्रफुल्लित कर देंगे।"

कविवर पं० रामनरेश त्रिपाठी सम्पादक "वानर" "मनोहर चित्र, सुन्दर छपाई, बढ़िया कागज़ और बच्चों की रुचि को उकसाने वाले सरल और मजेदार भाषा में लिखे हुये लेखों को देखते हुये 'चमचम' अपनी श्रेणी के पत्रों में सब से अधिक चमकदार है।"

श्री ठाकुर श्रीनाथसिंह, बालसखा-सम्पादक—चमचम मुझे खूब पसन्द आया। इसमें मुझे बहुत सी ऐसी बातें मिली जो बच्चों के दूसरे पत्रों में नहीं हैं। मेरे घर में चमचम के साथ ही दो छोटे बच्चे पहुंचे, और उसके लेने के लिये झपटे। अगर बीच में मैं अपना मज़बूत हाथ न डाल देता तो यह सुन्दर चीज़ देखने से मैं भी महरूम रह जाता।

आर्य-मित्र—ऐसे बाल-विनोद साहित्य की हिन्दी में बड़ी आवश्यकता है, हर्ष है कि उसकी पूर्ति की ओर पण्डित गङ्गाप्रसाद उपाध्याय जैसे विद्वानों का ध्यान गया है जो सफल और सिद्धहस्त अध्यापक होने के कारण बाल-मनोवृत्ति से भली प्रकार परिचित हैं। अगर माता-पिता अपने बालकों को निरर्थक खिलौने न दिखा कर यह सार्थक खिलौना खरीद दें तो बड़ा ही लाभ हो।"

The Leader writes.

The illustrations, articles and poems have been selecteed carefully and make the jourual one of absorbing interest for the little children for whom it is intended."

अर्द्ध साप्ताहिक 'भारत' लिखता है—हमारा तो विश्वास है कि बाल-बालिकाएं इस साहित्यिक "चमचम" पर उसी प्रकार टूट पड़ेंगे जिस प्रकार कि वे सुप्रसिद्ध बङ्गला मिठाई 'चमचम' पर टूटते हैं।

अनुवादक—मंगलाप्रसाद परितोषिक प्राप्तकर्त्ता

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०

धम्मपद

महात्मा बुद्ध संसार के प्रसिद्ध पुरुषों में से हैं। उनका त्यागमय तपस्वी जीवन सब के लिये आदर्श है। महात्मा बुद्ध ने अपने शिष्यों को जो उपदेश दिये थे, वे सब इसमें संग्रहीत हैं। यह उपदेश प्राकृत भाषा में थे इसलिये प्रत्येक प्राणी उनसे लाभ नहीं उठा सकता था। अब उनका हिन्दी में अनुवाद हो गया है। पुस्तक के आरम्भ में २८ पृष्ठों की एक भूमिका है। पृष्ठ संख्या १६० छपाई तथा काग़ज़ उत्तम है। मूल्य १)

मिलने का पता—

कला प्रेस,

प्रयाग।

वैदिक साहित्य का सर्वोत्तम ग्रन्थ

आस्तिकवाद

[परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण]

लेखक---वैदिक-साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान्, मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्तकर्त्ता, अनेक पुस्तकों के रचयिता, वेदोदय तथा चमचम के-

सम्पादक

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०

"ईश्वर" एक बहुत बड़ी पहेली है। इसके विषय में दार्शनिकों में सदा मतभेद रहे हैं। कुछ दार्शनिकों ने कहा, ईश्वर नहीं है। कुछ दार्शनिकों ने कहा कि ईश्वर की अब आवश्यकता नहीं रही। "निटशे" नामक दार्शनिक ने कहा कि "इस विज्ञान के युग में ईश्वर की मृत्यु हो गई है।" एक दूसरे दार्शनिक "मेकाइल वेकुनिन" ने घोषणा कर दी "यदि सचमुच कोई ईश्वर मौजूद है तो उसे नष्ट कर देना आवश्यक है"। विद्वान् लेखक ने ऐसे सिद्धान्तों की कड़ी आलोचना की है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने इस पुस्तक को दर्शन विषयक सर्वोत्तम ग्रन्थ समझ कर इसके लेखक को १२००) का मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक दिया है। ४०० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य १)

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी भूमिका में लिखते हैं "बड़े काम की चीज है, पढ़ने और मनन करने योग्य है"।

महात्मा हंसराज जी लिखते हैं "मेरी यह तीव्र इच्छा है कि हमारे नवयुवक आपकी रची हुई पुस्तक को पढ़ कर अपने जीवन-केन्द्र को स्थिर और सुखदायक बनावें"।

आर्य मित्र—आस्तिकवाद के पाठ से विद्वान् लेखक के व्यापक ज्ञान, विस्तृत अध्ययन और गम्भीर गवेषणा का अच्छी तरह परिचय मिल जाता है।······आस्तिकवाद का खूब प्रचार होना चाहिये।

पृष्ठ संख्या ३८२ मूल्य १।)

अद्वैतवाद

लेखक

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय, एम० ए०

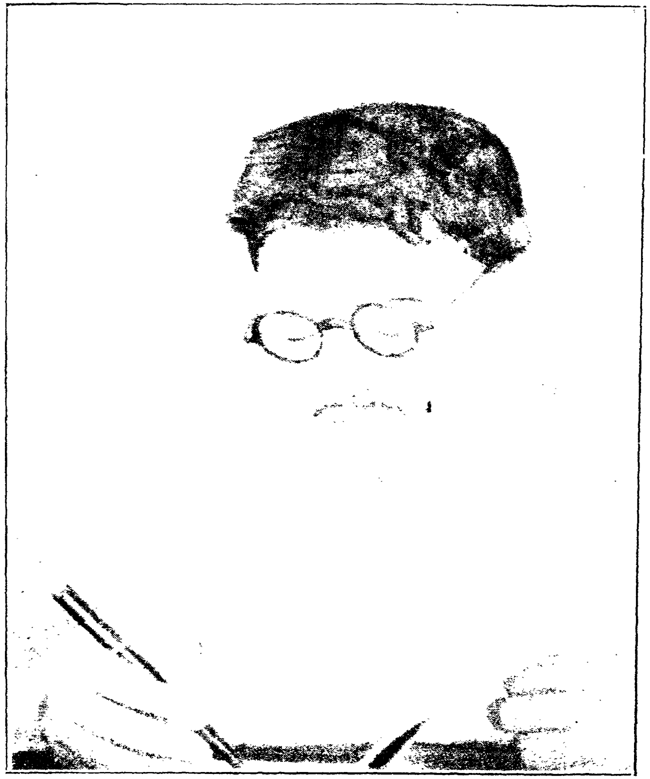
लेखक ने कई वर्षों के उत्कट परिश्रम के बाद यह पुस्तक लिखी है। शंकर के अद्वैतवाद ने जनता पर जादू कर दिया है, परन्तु यह मत न तो वेदों के ही अनुकूल है और न युक्तियों से ही जँचता है। इस पुस्तक में स्वप्न, माया, ईश्वरैक्य-वाद, कारणैक्यवाद, वस्त्वैक्यवाद, सत्ता और एकीकरण, पर विद्वत्ता पूर्ण टिप्पणियाँ दी गई हैं। अन्त में वेद, तथा उपनिषदों से प्रमाण दिये गये हैं जिनसे अद्वैतवाद का खण्डन हो जाता है। अभी तक ऐसी महत्वपूर्ण पोथी दूसरी नहीं निकली। अवश्य मंगाइये।

मिलने का पता :—

कला प्रेस, प्रयाग।

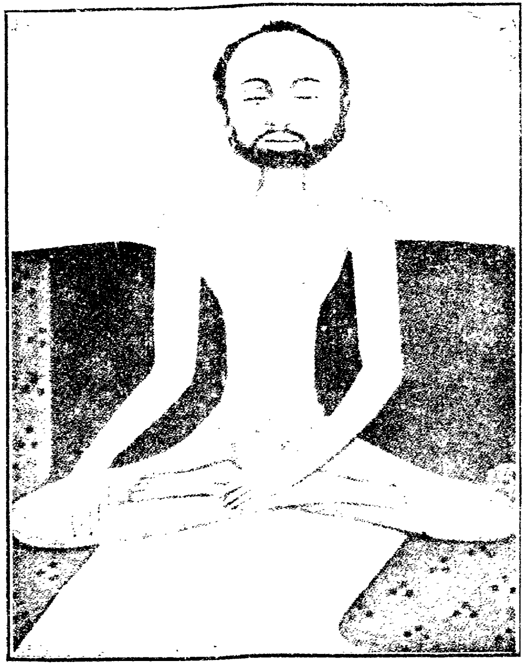


श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०

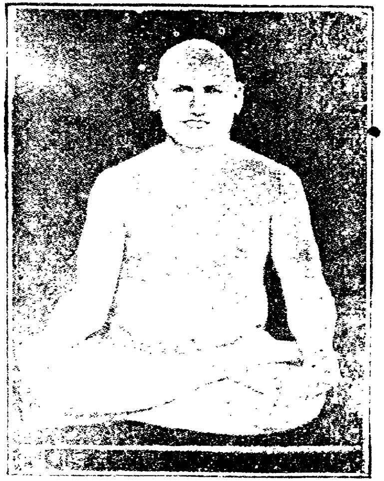


श्री विश्वप्रकाश बी० ए०, एल-एल० बी०

गुरु और शिष्य



परिव्राजकाचार्य
श्री स्वामी विरजानन्द जी महाराज



आर्य्य समाज के प्रवर्त्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती